हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान कॉनिफर परिसर, पंथाघाटी, शिमला - 171013

पौधशाला में कीट-पतंगों व बीमारियों के प्रबन्धन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमः रिपोर्ट

अवधि - 6 दिसम्बर 2016 से 8 दिसम्बर 2016

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के संस्थान के सभागार में **'पौधशाला में कीट-पतगों एवं बीमारियों के प्रबन्धन'** पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 दिसम्बर 2016 से 8 दिसम्बर 2016 तक किया गया । यह प्रशिक्षण वानिकी प्रजाति पौधशाला में कीट पतंगों की घटनाओं और उनके प्रबन्धन पर केन्द्रित था तथा हिमाचल प्रदेश से आये हुए विभिन्न हितधारकों में इस विषय पर जागरूकता को बढ़ावा देना था । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य वन विभाग के कर्मचारी एवं महाविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहे । **डा० अश्वनी तपवाल**, वैज्ञानिक-ई एँव प्रशिक्षण समन्वयक ने 6 दिसम्बर 2016 को प्रतिभागियों का स्वागत किया और तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूप रेखा से अवगत कराया । **डा० रणजीत सिंह**, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रभागाध्यक्ष, वन बचाव प्रभाग, ने प्रतिभागियों के समक्ष कीट-पतंग एवं रोग निदान सम्बन्धित मुद्वों पर संक्षिप्त नजर डाली तथा साथ ही वर्तमान परिदृश्यों में इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम की महत्ता भी समझाई । निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, **डॉ० वी०पी० तिवारी** ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया और अपने उदघाटन भाषण में पौधशाला में कीट-पतंगों के द्वारा हो रहे नुकसान पर भी प्रकाश डाला । इन्होने यह राय दी कि कीट—पतंगो एवं बीमारियों का सही निदान पाना व इसके प्रकोप से बचाना जरूरी है । डा० तिवारी ने प्रशिक्षुओं को वार्तालाप में अधिकाधिक भाग लेकर इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रोत्साहित भी किया ।

पहले तकनीकी सत्र के दौरान संस्थान से **डॉ० रंजीत सिह,** वैज्ञानिक- एफ एवं प्रभागाध्यक्ष, वन बचाव प्रभाग, ने वानिकी प्रजातियों के कीट-पतंगों के पर्यावरण मैत्री प्रबन्धन के बारे

में विस्तारपूर्वक विवेचना की । इनकी राय थी की विभिन्न तरह के नियंत्रक उपायों को इक्टठा करके योजनाबद्व तरीकों से कीट- पतगों और विमारियों का प्रबन्धन किया जाना चाहिए । हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला से आये हुए **डा० टी०एन० लखनपाल** (प्रो० अमरेट्स) ने वानिकी में माइकोराईजा के महत्व एवं पौधशाला में हो रहे जड-सड़न रोगों के प्रबन्धन में इसके इस्तेमाल पर चर्चा की ।

डा० संदीप शर्मा, वैज्ञानिक एफ एवं प्रभागाध्यक्ष, वन वर्धन एवं वृक्ष सुधार प्रभाग ने हिमाचल प्रदेश के महत्वपूर्ण शंकुधारीयों की कंटेनेराईज्ड पौधशाला तकनीक पर अपनी बात रखी । भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, शिमला से आए हुए वैज्ञानिक, **डॉ० संतोष वाटपाडे** ने वन पौधशालाओं की मुख्य बीमारियों एवं उनके प्रबन्धन पर बल डाला ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के अनुसंधान केन्द्र शिलारू का स्थानीय दौरा किया गया । प्रशिक्षुओं को नारकंडा के आसपास के शंकुधारी वनों को भी दिखाया गया । डा० तपवाल, डा० पवन कुमार का दल प्रशिक्षुओं के साथ थे और नारकण्डा वन की अन्य दूसरी वृक्ष प्रजातियो से जुडे हुए कीट-पतंगों और बीमारियों फैलाने वाले रोगाणुओं की पहचान और संग्रहण का क्षेत्र प्रतिपादन दिखाया । डा० तपवाल और डा० पवन कुमार ने क्षेत्रीय दौरा के दौरान कीट व बीमारियों के कारण, लक्षण एवं उपचारात्मक तरीकों को प्रतिभागियों से चर्चा की ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन **डॉ० पवन कुमार**, वैज्ञानिक –डी के व्याख्यान से शुरू हुआ जिसमें इन्होनें बीज भण्डारण के कीट-पतंगों, पौधशाला एवं उनके प्रबन्धन पर अपने विचार रखे । **डॉ० अश्वनी तपवाल** ने शंकुधारीयों की बीमारियों और उनके पर्यावरण मित्र प्रबन्धन के बारे में अवगत कराया । इसके बाद प्रतिभागियों को वन बचाव प्रभाग की प्रयोगशाला में कीट-विज्ञान व विकृति विज्ञान में होनें वाले उपकरणों एवं तकनीक से परिचित करवाया गया । प्रशिक्षुओं को फंफूदी रोगाणुओं का पृथक्करण, माईक्रोस्कोपी, कीट-पंतगों की स्ट्रेचिगं और फिकिसिंग आदि सिखाया गया । प्रशिक्षण कार्यक्रम के पूर्ण अधिवेशन के दौरान, निदेशक **डॉ० वी०पी० तिवारी** ने सहभागिता प्रमाण पत्र प्रतिभागियों को वितरित किये । इन्होने प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों की गहरी रूचि दिखाने के लिए उनकी सराहना की और इस प्रकार से प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल व सम्पन्न बनाने के लिए उक्त विषय के ऊपर जागरूकता एँवं सक्रियता प्रदान करने के लिए आयोजाकों की भी तारीफ की । आगामी भविष्य में होने वाले प्रतिभागियों से प्रतिक्रियाओं के रूप में जरूरी सुझाव लिए गये । प्रशिक्षण के अन्त में **डा० पवन कुमार** द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया ।

प्रशिक्षण की झलक

हि.व.अ.सं.
HFRI

Rating of Forest Tree Species to Insect Pests

Mycorrhizal fungi as bio control agents against root pathogens
T N Lakhanpal
Department of BioSciences
H P University
Shimla 171005

Disease means

Green House
Shade House
Irrigation infrastructure

Causes/Factors for Plant Diseases

MANAGEMENT OF INSECT-PESTS
AND DISEASES IN THE NURSERY
Capacity Building Training
For the Field Functionaries of State Forest Department and College Students
6-8 December, 2016

MANAGEMENT OF INSECT-PESTS
AND DISEASES IN THE NURSERY
Capacity Building Training
For the Field Functionaries of State Forest Department and College Students
6-8 December, 2016

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
MANAGEMENT OF INSECT-PESTS
AND DISEASES IN THE NURSERY
Capacity Building Training
For the Field Functionaries of State Forest Department and College Students
6-8 December, 2016

मीडिया कवरेज

प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

शिमला, 6 दिसम्बर (प्रीति): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में जिला शिमला व किन्नौर वन मंडल के अधिकारियों व कर्मचारियों तथा शिमला के विभिन्न महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए पौधशाला में कीटों व बीमारियों के प्रबंधन पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आगाज हुआ। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम 8 दिसम्बर तक चलेगा। इसमें 20 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य पौधशाला में लगने वाले पौधों में कीटों व बीमारियों का नियंत्रण एवं प्रबंधन करना है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान द्वारा पौधशाला के पौधों पर किए गए शोध कार्यों पर आधारित है।

पंजाब केसरी ई-पेपर Wed, 07 December 2016
epaper.punjabkesari.in//c/152

प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

शिमला, 8 दिसम्बर (नितेश): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में जिला शिमला व किन्नौर वन मंडल के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा शिमला के विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए ''पौधशाला में कीटों व बीमारियों के प्रबंधन'' विषय पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम वीरवार को संपन्न हुआ, जिसमें 20 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य पौधशाला में लगने वाले कीटों व बीमारियों का नियंत्रण एवं प्रबंधन करना था। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान द्वारा पौधशाला के पौधों में कीट व उनके बीमारियां और उनके प्रबन्धन पर किए गए शोध कार्यों पर आधारित था।

पंजाब केसरी ई-पेपर Fri, 09 December 2016
epaper.punjabkesari.in//c/1524(

शिमला amarujala.com अमर उजाला चंडीगढ़ शुक्रवार, 9 दिसंबर 2016 4

पौधों को बीमारियों से बचाने के उपाय बताए

अमर उजाला ब्यूरो

शिमला।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में जिला शिमला और किन्नौर वनमंडल के अधिकारियों कर्मचारियों और शिमला के विभिन्न महाविद्यालय के छात्रों के लिए पौधशाला में कीटों और बीमारियों के प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पौधशाला में लगने वाले कीटों और बीमारियों का नियंत्रण और प्रबंधन करना था। वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला और प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. अश्वनी तपवाल ने बताया कि संस्थान में नर्सरी के पौधे को कीट और रोगों से बचाने के लिए कई वर्षो से शोध कार्य किए जा रहे हैं और इन पौधों को संक्रमणों से बचाने की तकनीक भी तैयार की है। समापन समारोह की अध्यक्षता हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डॉ. वी. पी तिवारी ने किया। डॉ. रंजीत सिह प्रभाग प्रमुख, वन बचाव प्रभाग ने संबोधन में संस्थान के निदेशक और सभी प्रशिक्षणार्थियों का आभार जताया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रोफेसर टीएन लखनपाल और डॉ. संतोष बाटपाडे, डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. पवन कुमार ने भी विचार रखे।